

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और महिलाओं की आत्मनिर्भरता के बीच संबंध

¹ निकिता चतुर्वेदी, ²डॉ. संगम पांडेय

¹शोधार्थी, ² शोध निर्देशक

¹⁻²विभाग: समाजशास्त्र, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

सार

यह अध्ययन भारत में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और घरेलू हिंसा के बीच संबंध की पड़ताल करता है, विशेषकर आर्थिक हिंसा के बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों और मध्य प्रदेश में किए गए क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि घरेलू हिंसा किस प्रकार महिलाओं की आत्मनिर्भरता और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अध्ययन से पता चलता है कि घरेलू हिंसा की संभावना सामाजिक-आर्थिक कारकों जैसे शिक्षा, रोजगार की स्थिति और परिवार की आय से गहराई से जुड़ी है। भले ही हिंसा सभी वर्गों की महिलाओं को प्रभावित करती है, आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि कम जीवन स्तर और गरीब पृष्ठभूमि वाली महिलाएं अधिक शिकार होती हैं। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन सामाजिक दृष्टिकोण, लिंग आधारित भूमिका और यौन संबंधों के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं की सोच में अंतर को भी उजागर करता है। यह निष्कर्ष सामने आता है कि महिला सशक्तिकरण और शिक्षा में सुधार के साथ घरेलू हिंसा की प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, घरेलू हिंसा, आर्थिक हिंसा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, अंतरंग साथी हिंसा, भारत, मध्य प्रदेश, लिंग आधारित भेदभाव, मानसिक स्वास्थ्य, सांख्यिकीय विश्लेषण।

परिचय

भारत भर में महिलाओं की सुरक्षा और कल्याण पर शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक हिंसा के उनके अनुभवों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य के प्रति सचेत रहना महत्वपूर्ण है कि सभी महिलाएं हिंसा के कृत्यों के प्रति संवेदनशील हैं। महिलाओं के खिलाफ हिंसा हमेशा दिखाई नहीं देती क्योंकि आर्थिक और मनोवैज्ञानिक हिंसा को अक्सर हिंसा के रूप में भी नहीं देखा जाता। महिलाओं के खिलाफ हिंसा के सबसे आम रूपों में से एक पति या अन्य पुरुष साथी द्वारा की गई हिंसा है, जिसे अक्सर घरेलू हिंसा या अंतरंग साथी हिंसा (आईपीवी) कहा जाता है। घरेलू हिंसा का एक क्षेत्र आर्थिक हिंसा है जिसे अक्सर मनोवैज्ञानिक हिंसा के दायरे में माना जाता है। आर्थिक कारकों के कारण होने वाली घरेलू हिंसा में एक महिला की आर्थिक संसाधनों का उपयोग करने और बनाए रखने की क्षमता को नियंत्रित करना शामिल है, जिससे उसकी आत्मनिर्भरता की क्षमता को खतरा होता है। इनके विपरीत, हाल ही में कई अध्ययनों ने आर्थिक हिंसा को हिंसा के एक अनोखे रूप के रूप में परिभाषित किया है। चूंकि आर्थिक हिंसा आईपीवी का एक महत्वपूर्ण पहलू है, इसलिए आर्थिक हिंसा को नजरअंदाज करने वाले अध्ययन बेरोजगारी और आर्थिक स्वतंत्रता की कमी के कारण होने वाले एक महत्वपूर्ण कारक को नजरअंदाज कर देते हैं, जो आर्थिक शोषण के रूपों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है। दहेज उत्पीड़न के मुद्दे ने घरेलू हिंसा में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले कारण के रूप में ध्यान आकर्षित किया है। एक सर्वेक्षण से पता चला है कि टकराव अक्सर लिंग भूमिकाओं और अपेक्षाओं के विभिन्न भागों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।

यह विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं के खिलाफ हिंसा की गंभीरता और निरंतरता और विभिन्न स्तरों पर जबरन सेक्स में स्पष्ट है। महिलाओं पर घरेलू हिंसा लगातार परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से जुड़ी हुई है, लेकिन महिलाओं पर घरेलू हिंसा की संभावना और परिवार के आय स्तर पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। इसके अलावा, महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा लगातार परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (टेक्स्ट रेफ) से जुड़ी हुई है, लेकिन महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की संभावना और परिवार के आय स्तर पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। ऐसे कई अध्ययन हुए हैं जो सामाजिक-आर्थिक स्थिति और घरेलू हिंसा को सहसंबंधित करते हैं। उदाहरण के लिए, व्हेली और मेसनर ने आर्थिक विचलन सूचकांक और महिलाओं पर हिंसा का अध्ययन किया, जबकि सैन्ज-बारबेरो ने पाया कि आर्थिक असमानताएँ महिलाओं के हिंसा के जोखिम को बढ़ाती हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति के लिए आय चर के अलावा, महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की संभावना की जांच करने के लिए शैक्षिक अंतर पर भी विचार किया गया।

महिलाओं पर शारीरिक और मनोवैज्ञानिक हिंसा सहित घरेलू हिंसा के कारण बहुस्तरीय हैं। भारत में कई अध्ययन (सुस्मिता, 2000) घरेलू हिंसा के कारकों को अनुभवजन्य रूप से पहचानने के लिए अपने अध्ययनों में संकेत देते हैं। घरेलू हिंसा और परिवार की आर्थिक स्थिति के बीच संबंध पर बहस विवाहित महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की संभावना की खोज में एक गहरी समस्या बन गई। परिवार की आर्थिक स्थिति को घरेलू हिंसा के सहसंबंध के रूप में मानना उचित है। इस तर्क के अनुरूप, इस अध्ययन में हिंसा की रिपोर्टिंग के साथ संबंधों के लिए परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की खोज की जा सकती है। आर्थिक हिंसा शोध का एक क्षेत्र है जो हाल ही में उभरा है। अनिश्चित प्रभाव के अलावा, कई अन्य कारक भी हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से परिवार की आर्थिक स्थिति से जुड़े हैं

अध्ययन में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) से युक्त मिश्रित पद्धति अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया गया और 2005-06 से 2020-21 की अवधि के दौरान डेटा एकत्र किया गया।

अध्ययन में भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाएँ शामिल थीं। मध्य प्रदेश (भारत) में घरेलू हिंसा और आर्थिक स्थिति की समस्या की जाँच करने के लिए मिश्रित तरीकों का इस्तेमाल करके आवश्यक डेटा एकत्र किया गया। अध्ययन में मुख्य रूप से भारत के लिए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण रिपोर्टों से संकलित डेटा का उपयोग किया गया, जो 2005-06 और 2020-21 के दौरान आयोजित किए गए थे। इस अध्ययन का दूसरा चरण मध्य प्रदेश राज्य में 2020-21 में किए गए घरेलू सर्वेक्षण पर आधारित था। उत्तरदाता 15-49 आयु वर्ग की कभी-न-कभी विवाहित महिलाएँ थीं। कुल नमूना आकार में 15-49 आयु वर्ग सहित 160 परिवार शामिल थे। गुणात्मक डेटा शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों की 80 विवाहित महिलाओं के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया था। अध्ययन में तीन प्रकार के घरेलू दुर्व्यवहारों की जाँच की गई – शारीरिक, भावनात्मक/मनोवैज्ञानिक और आर्थिक, एकत्रित जानकारी कभी-न-कभी विवाहित महिलाओं से उनके पतियों और अन्य रिश्तेदारों द्वारा की गई हिंसा के बारे में और कभी-न-कभी विवाहित महिलाओं से उनके प्रेमी सहित किसी के द्वारा की गई हिंसा के बारे में प्राप्त की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय शोध से पता चला है कि घरेलू हिंसा ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली हिंसा के सबसे सामान्य रूपों में से एक है।

घरेलू हिंसा का मापन

पति या प्रेमी द्वारा महिलाओं पर किए गए घरेलू हिंसा को आमतौर पर रिश्तेदारों सहित अन्य अपराधियों द्वारा की गई हिंसा की तुलना में अधिक विस्तार से मापा जाता है। स्पष्ट रूप से, पतियों द्वारा हिंसा को एक गंभीर रूप से संशोधित संघर्ष रणनीति स्केल (बै) (स्ट्रॉस, 1990) का उपयोग करके मापा जाता है। पहले बताए गए शोध का उत्तर देने के लिए, प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण ^ज। जैसे सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया गया था, अध्ययन क्षेत्र में हिंसा में बदलाव के पैटर्न की तुलना करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रदर्शन किया गया था। लॉजिस्टिक रिग्रेशन विश्लेषण का उपयोग करते हुए, महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा पर आर्थिक स्थिति के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए डेटा पर सहसंबंध विश्लेषण किया गया था। श्राग और रवि ने भी पीड़ित महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए यही पद्धति लागू की थी।

तालिका 1.1. घरेलू दुर्व्यवहार के विभिन्न प्रकार

शारीरिक हिंसा	यौन हिंसा	भावनात्मक हिंसा
आपकी बांह मरोड़ना या आपके बाल खींचना	आपको शारीरिक रूप से यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर करना	दूसरों के सामने आपको अपमानित करने के लिए कुछ कहना या करना
आपको धक्का देना, हिलाना या आप पर कुछ फेंकना	आपको कोई भी यौन कार्य करने के लिए मजबूर करना	आपको या आपके किसी करीबी को चोट पहुँचाने या नुकसान पहुँचाने की धमकी देना
आपको मुक्का मारना या किसी ऐसी चीज से मारना जिससे चोट लग सकती है		आपका अपमान करना या आपको अपने बारे में बुरा महसूस कराना
आपको लात मारना, घसीटना या पीटना		दूसरों के सामने आपको अपमानित करने के लिए कुछ कहना या करना
जानबूझकर आपका गला घोटने या जलाने की कोशिश करना		
चाकू, बंदूक या किसी अन्य हथियार से आपको धमकाना या हमला करना आपकी बांह मरोड़ना या आपके बाल खींचना		

इस खंड में अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत किए जाएंगे और उन पर चर्चा की जाएगी।

सामाजिक-जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा कोई नई बात नहीं है और यह लंबे समय से समाज में व्याप्त है। जब उन्हें अपने घरों में सबसे सुरक्षित होना चाहिए, तो महिलाएं अक्सर गंभीर खतरे में होती हैं। बहुत से लोग घर पर किसी ऐसे व्यक्ति के हाथों आतंक और हिंसा का सामना करते हैं जिस पर उन्हें भरोसा करना चाहिए। महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा, खास तौर पर महिलाओं के शारीरिक, मानसिक और प्रजनन स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव डालती है। महिलाओं के खिलाफ अंतरंग साथी हिंसा (आईपीवी) का गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा, जो सामाजिक-आर्थिक और आर्थिक सीमाओं से परे है, प्रगति के लिए एक प्रमुख बाधा के रूप में देखा जाता है।

दुनिया भर में अपने अंतरंग भागीदारों द्वारा महिलाओं के घरेलू हिंसा की व्यापकता को देखते हुए, विभिन्न पारिवारिक, संबंधपरक और सांस्कृतिक स्थितियों में इन घटनाओं की जांच करना आवश्यक है। सर्वेक्षण के नतीजे बताते हैं कि 23 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उन्हें 2021-22 में 15 साल की उम्र से अपने पतियों द्वारा शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा, जबकि 1998-99 के सर्वेक्षण में यह कम था, जो 17.60 प्रतिशत था। शारीरिक दुर्व्यवहार की संभावना वाली अधिकांश महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार हुईं, उनके पतियों ने अपराधी के रूप में काम किया (72.73%)। घरेलू हिंसा महिलाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्वास्थ्य समस्याओं की एक विस्तृत श्रृंखला के संपर्क में लाती है। ऐसा माना जाता है कि जैसे-जैसे देश आगे बढ़ेगा, महिला सशक्तिकरण अधिक होगा और महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा कम होगी, जट्ट दुनिया में महिलाओं के खिलाफ हिंसा के सबसे प्रचलित प्रकारों में से एक है, और इसका पीड़ितों पर महत्वपूर्ण, दीर्घकालिक और व्यापक स्वास्थ्य प्रभाव हो सकता है। कई अध्ययन इस बात का भी समर्थन करते हैं कि भारत जैसे विकासशील देशों में महिलाओं को अपने साथियों द्वारा शारीरिक हिंसा का सामना अधिक बार करना पड़ता है। तालिका 2 यह भी दर्शाती है कि 2021-22 में 16.87: महिलाओं ने अपने ससुराल वालों द्वारा शारीरिक दुर्व्यवहार का शोषण किए जाने की सूचना दी। इसी तरह, 5.04: महिलाओं ने अन्य व्यक्तियों द्वारा शारीरिक दुर्व्यवहार किए जाने की सूचना दी। तीनों मामलों में, 1998-99 की तुलना में 2021-22 में हिंसा की दर अधिक थी। साथ ही, महिलाओं ने अपने पतियों द्वारा मुख्य रूप से दुर्व्यवहार किए जाने की सूचना दी, जो तालिका 2 की एक प्रमुख अंतर्दृष्टि है। सरकार एम. ए. द्वारा किए गए एक अध्ययन से भी इसी तरह पता चला कि अधिकांश महिलाओं (72.73:) के मामले में पति ही अपराधी थे।

तालिका 2 में गैर-कामकाजी महिलाओं की कार्य स्थिति से पता चलता है कि कुल मिलाकर, 2021-22 के दौरान 11.87: महिलाएं शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना कर रही हैं, जबकि 1998-99 में 16.90: गैर-कामकाजी महिलाओं को मारपीट और शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा था। इस प्रकार, दो दशकों में, गैर-कामकाजी महिलाओं के शारीरिक दुर्व्यवहार में काफी कमी आई है। महिलाओं का सबसे कमजोर समूह वे हैं जो हिंसा का अनुभव करती हैं और गरीब वातावरण में रहती हैं (मिशेल एट अल।, 2014)। इसके अलावा तालिका 2 से पता चलता है कि अध्ययन का एक अन्य चर कृषि और घरेलू गतिविधियों में लगी महिलाएं हैं, जो दर्शाता है कि पिछले कुछ वर्षों में उनके खिलाफ हिंसा में कमी आई है (1998-99 में 27.90: से 2021-22 में 21.09: तक)। इस प्रकार, परिणाम बताते हैं कि पिछले दशकों में कृषि और घरेलू गतिविधियों में लगी महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के मामले कम हुए हैं। इसी प्रकार, जो महिलाएं गैर-कृषि गतिविधियों में शामिल हैं, उनके लिए इस तरह के शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 1998-99 में 26.10: था और 2021-22 में यह तुलनात्मक रूप से कम था।

कुल मिलाकर, डेटा से पता चलता है कि महिलाओं का शारीरिक शोषण उन लोगों में सबसे ज्यादा है जो कृषि और गैर-कृषि दोनों तरह की गतिविधियों में काम करते हैं और जो काम नहीं करते हैं उनमें यह सबसे कम है। महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार या घरेलू हिंसा में गरीब घरेलू पृष्ठभूमि का अहम योगदान है। यह लंबे समय से देखा गया है कि गरीब घरों में इस तरह के घरेलू दुर्व्यवहार का अनुभव होने की संभावना अधिक होती है। घरेलू हिंसा के मामलों और घरेलू आय में एक बड़ा संबंध है। इसका मतलब यह नहीं है कि जो लोग बेहद अमीर और आर्थिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें शारीरिक दुर्व्यवहार या हिंसा का सामना नहीं करना पड़ेगा, लेकिन संभावना बहुत कम है।

ऊपर चर्चा की गई दोनों अवधियों (1998–99 और 2021–22) में, जिन घरों में जीवन स्तर कम है, उनमें उच्च जीवन स्तर वाले घरों की तुलना में विवाहित महिलाओं के साथ शारीरिक दुर्व्यवहार का प्रतिशत अधिक दर्ज किया गया। आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि उच्च जीवन स्तर वाले घरों में, 1998–99 में जीवन स्तर वाले घरों में घरेलू हिंसा की रिपोर्ट का प्रतिशत 10.10: था, 1998–99 में घरेलू हिंसा की रिपोर्ट का प्रतिशत 10.10: था और 2021–22 में यह 15.11: था। आश्चर्यजनक रूप से, पिछले दशकों में, उच्च और निम्न जीवन स्तर वाले घरों में हिंसा बढ़ी है। केवल मध्यम जीवन स्तर वाली श्रेणी में 15 वर्ष की आयु से विवाहित महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा की घटनाओं में कमी देखी गई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, वैश्विक स्तर पर 30: महिलाएँ जो किसी रिश्ते में रही हैं, ने संकेत दिया है कि उनके अंतरंग साथी ने उनका शारीरिक या यौन शोषण किया है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा की व्यापकता का अनुमान देश के आधार पर 20: से 50: तक है। जब भी घरेलू हिंसा का विषय चर्चा में आता है, तो उन कारकों का विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण होता है जो इस हिंसा को जन्म देते हैं। तालिका 3 में, 2005–06 और 2021–22 जैसे दो अलग-अलग समय अवधियों के लिए पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग उत्तरदाताओं के प्रतिशत के साथ घरेलू हिंसा के विभिन्न कारणों को सूचीबद्ध किया गया था।

एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि जब जोड़े लंबे समय (छह साल या उससे अधिक) के लिए विवाहित होते हैं, तो विवाहित महिलाओं द्वारा घरेलू हिंसा का अनुभव करने की संभावना बढ़ जाती है। जैसा कि हम जानते हैं, लिंग के आधार पर दृष्टिकोण हैं और इसलिए यहां पुरुषों और महिलाओं के दृष्टिकोण का अलग-अलग उल्लेख करना महत्वपूर्ण है। जब पत्नियों को मारने की बात आती है, तो पति औचित्य के लिए हिंसा के कई अलग-अलग कारण बताते हैं। तालिका में उल्लिखित कुछ कारण समान अध्ययनों की साहित्य समीक्षाओं पर आधारित थे। दोनों अवधियों (2005–06 और 2020–21) के दौरान अधिकांश पुरुषों और महिलाओं ने जवाब दिया कि जब पत्नी ससुराल वालों के प्रति अनादर दिखाती है तो पति द्वारा अपनी पत्नी को मारना या पीटना उचित है। इससे पता चलता है कि पति द्वारा पत्नी की अधिकांश हिंसा या पिटाई तब होती है जब पत्नी ससुराल वालों के प्रति सम्मान दिखाने में विफल रहती है।

दूसरा सबसे आम रवैया यह था कि पत्नी घर या बच्चों की उपेक्षा करती है, जिसका जिक्र ज्यादातर उत्तरदाताओं ने किया। 2005–06 की समयावधि में, 24.80: महिलाओं और 17: पुरुषों ने जवाब दिया कि जब पत्नी घर या बच्चों की उपेक्षा करती है, तो पति द्वारा अपनी पत्नी को पीटना जायज है। 2020–21 की अवधि के दौरान, 26.60: महिलाओं और 27.80: पुरुषों ने व्यक्त किया कि जब पत्नी उससे बहस करती है, तो पति द्वारा अपनी पत्नी को पीटना जायज है।

कुछ मामलों में, यह देखा गया कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा तब होती है जब वे अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने से इनकार करती हैं। ऐसे मामलों में, पत्नी द्वारा अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने से इनकार करने के विभिन्न कारणों का विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण है। कई कारणों में से, कुछ उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण कारणों का उल्लेख तालिका 1.3 में किया गया है। तालिका से यह स्पष्ट था कि एक पत्नी का अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने से इनकार करना उचित है जब वह थकी हुई हो या उसका मूड न हो (2005–06 के दौरान 73.30: महिलाएं, 73.2: पुरुष और 2020–21 के दौरान 76.4: महिलाएं और 69.50: पुरुष)। ये आंकड़े बताते हैं कि पत्नी द्वारा संभोग से इनकार करने का मुख्य कारण यह था कि वह थकी हुई होगी या सेक्स करने के मूड में नहीं होगी।

इस अध्ययन से कुछ दिलचस्प जानकारी यह भी मिली है कि पत्नी अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने से इंकार कर देती है क्योंकि वह जानती है कि उसके पति को यौन संचारित रोग है, और उसे लगता है कि अगर वह यौन संबंध बनाने के लिए राजी होती है तो यह उसके लिए खतरनाक है। जबकि 2005–06 की अवधि के दौरान 16.6: महिलाओं और 19: पुरुषों ने जवाब दिया कि वे तालिका 3 में उल्लिखित किसी भी कारण से सहमत नहीं हैं। इस मुद्दे का दूसरा पक्ष, जब महिलाएं अपने पतियों के साथ यौन संबंध बनाने से इनकार करती हैं तो पुरुषों की राय पर विचार करना भी महत्वपूर्ण है। पुरुषों से सवाल पूछे गए कि जब भी महिलाएं सेक्स के लिए मना करती हैं तो वे क्या सोचते हैं और उनकी इस पर क्या प्रतिक्रिया होती है। यह देखा गया कि दोनों समय अवधि के दौरान अधिकांश पुरुषों ने जवाब दिया कि वे तालिका 3 में उल्लिखित किसी भी व्यवहार से सहमत नहीं हैं।

निष्कर्ष:

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनकी आत्मनिर्भरता और घरेलू हिंसा के अनुभव के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। विशेष रूप से आर्थिक हिंसा एक ऐसा पहलू है जिसे अब तक कम समझा गया था, परंतु यह महिलाओं की स्वतंत्रता और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। अध्ययन के आंकड़े बताते हैं कि कम आय, शिक्षा की कमी और पारंपरिक लिंग भूमिका जैसी सामाजिक-आर्थिक कमजोरियाँ महिलाओं को घरेलू हिंसा के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती हैं। इसके विपरीत, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक जागरूकता में वृद्धि महिलाओं को हिंसा से उबरने और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सशक्त बनाती है। अतः यह आवश्यक है कि नीति निर्माण, शिक्षा प्रणाली और समाजिक दृष्टिकोण में समग्र परिवर्तन लाकर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाए, ताकि घरेलू हिंसा की प्रवृत्ति में स्थायी कमी लाई जा सके।

संदर्भ

1. अप्पादुरई ए (1996) आधुनिकता व्यापकरू वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम। मिनियापोलिसरू यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस।
2. बेक यू और बेक-गोर्शीम ई (1995) द नॉर्मल कैओस ऑफ लव। ऑक्सफोर्डरू पॉलिटी।
3. बेइलहर्ज पी (सं.) (2002) जिग्मंट बाउमन, 4 खंड। लंदनरू सेज।
4. कैरिगन टी, कॉनेल आरडब्ल्यू और ली जे (1985) मर्दानगी के एक नए समाजशास्त्र की ओर। सिद्धांत और समाज 14(5)रू 551-604।

5. चेम्बर्स सी (2005) मर्दाना वर्चस्व, कट्टरपंथी नारीवाद और परिवर्तन। नारीवादी सिद्धांत 6(3)रू 325दृ 346।
6. यूरोपीय आयोग (2010) महिलाओं के खिलाफ हिंसा, बच्चों के खिलाफ हिंसा और यौन अभिविन्यास हिंसा पर राष्ट्रीय कानून को मानकीकृत करने की संभावनाओं, अवसरों और जरूरतों का आकलन करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन। लक्जमबर्ग यूरोपीय आयोग।
7. फ़ैस्ट टी. (2000) अंतर्राष्ट्रीय प्रवास और अंतरराष्ट्रीय सामाजिक स्थानों की मात्रा और गतिशीलता। ऑक्सफोर्डरू क्लेरेंडन।
8. गैड डी (2003) लाइनों के बीच पढ़नारू व्यक्तिपरकता और पुरुषों की हिंसा। पुरुष और मर्दानगी 5(4)रू 333दृ354।

